

# **NEERAJ®**

# ्रिन्दी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल)

**B.H.D.C.-101** 

**B.A. Hindi (Hons.) - Ist Semester** 

**Chapter Wise Reference Book Including Many Solved Sample Papers** 

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Sanjay Jain, M.A. (Hindi), B.Ed.



(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: -

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Published by:



(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail: info@neerajbooks.com Website: www.neerajbooks.com

# © Copyright Reserved with the Publishers only.

# Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

#### Disclaimer/T&C

- 1. For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.
- 2. This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.
- 3. These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.
- 4. In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.
- 5. The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.
- 6. Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.
- 7. The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.
- 8. All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.
- 9. All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.

# Get books by Post & Pay Cash on Delivery:

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

# <u>Content</u>

# हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल)

# Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—Ju	ıne-2023 (Solved)	1
Question Paper—De	ecember-2022 (Solved)	1-2
Question Paper–Exa	am Held in July-2022 (Solved)	1
Question Paper–Exa	am Held in March-2022 (Solved)	1
Question Paper–Exa	am Held in February-2021 (Solved)	1
S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
1. काल-विभाजन	और नामकरण की समस्या	1
2. हिंदी साहित्य	की पृष्ठभूमि	12
3. आदिकालीन प	रिस्थितियों का अध्ययन	26
4. आदिकालीन व	<b>ा</b> व्य की प्रमुख प्रवृत्तियां	37
5. भक्ति आन्दोल	न तथा भक्तिकाव्य का वैचारिक आधार	50
6. भिक्तकालीन व	काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय	64
7. निर्गुण ज्ञानमार्ग	िकाव्यधारा	
8. निर्गुण प्रेममार्गी	(सूफी) काव्यधारा	89
9. सगुण कृष्णभवि	क्त काव्यधारा	103

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
10. सगुण रामभक्ति काव्यध	ारा	116
11. रीतिकालीन काव्य के	प्रेरणास्रोत और परिस्थितियाँ	128
12. रीतिकालीन काव्य की	प्रमुख प्रवृत्तियां : भाग-I	138
13. रीतिकालीन काव्य की	प्रमुख प्रवृत्तियां : भाग-II	149

# Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:



www.neerajbooks.com

# **QUESTION PAPER**

June – 2023

(Solved)

हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल)

B.H.D.C.-101

समय : 3 घण्टे |

। अधिकतम अंक : 100

नोट: किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. आदिकाल की राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों की चर्चा कीजिए।

**उत्तर-संदर्भ-**देखें अध्याय-3, पृष्ठ-28, 'आदिकाल की परिस्थितियां'

प्रश्न 2. अपभ्रंश के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-2, पृष्ठ-12, 'अपभ्रंश का उद्भव और विकास'

प्रश्न 3. आदिकालीन धर्म संबंधी साहित्य का विवेचन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-37, 'धर्म संबंधी साहित्य' प्रश्न 4. सगुण भिक्त के दार्शनिक आधारों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-5, पृष्ठ-53, 'सगुण भक्ति के दार्शनिक आधार'

प्रश्न 5. संतकाव्य की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए निर्गुण संतकाव्य का विवेचन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-7, पृष्ठ-75, 'संत काव्य'

प्रश्न 6. हिन्दी कृष्णभिक्त काव्य से संबंधित प्रमुख सम्प्रदायों का परिचय दीजिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-9, पृष्ठ-104, 'हिंदी कृष्ण भिक्त काव्य से संबंधित संप्रदाय', पृष्ठ-109, प्रश्न 4

प्रश्न 7. रीतिमुक्त काव्य की विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-13, पृष्ठ-150, 'रीतिमुक्त काव्य की प्रमुख विशेषताएँ'

प्रश्न 8. रीतिसिद्ध कवियों के वर्ण्य-विषयों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-12, पृष्ठ-139, 'रीतिबद्ध और रीतिसिद्ध कवियों के वर्ण्य विषय'

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणियां लिखिए-

(क) घनानंद

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-13, पृष्ठ-161, प्रश्न 4

(ख) परमाल रासो

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-40, 'परमाल रासो'

(ग) उपनिषद्

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-5, पृष्ठ-56, प्रश्न 3

(घ) रामकाव्य में समन्वय साधना।

**उत्तर-संदर्भ-**देखें अध्याय-10, पृष्ठ-118, 'सगुण रामभिक्त काव्य में समन्वय साधना'

# QUESTION PAPER

December – 2022

(Solved)

हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल)

B.H.D.C.-101

समय : 3 घण्टे । [ अधिकतम अंक : 100

नोट: किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

# प्रश्न 1. आदिकाल के नामकरण की समस्या पर विचार कीजिए।

**उत्तर-संदर्भ-**देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'नामकरण संबंधी विवाद'

प्रश्न 2. आदिकालीन अपभ्रंश साहित्य का परिचय दीजिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-2, पृष्ठ-13, 'अपभ्रंश साहित्य का अवलोकन'

प्रश्न 3. रासो काव्य की प्रमुख विशेषताएं बताइए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-41, 'रासो काव्य की प्रमुख विशेषताएं'

प्रश्न 4. भिक्तकाव्य की सामान्य विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-6, पृष्ठ-64, 'भिक्त काव्य की सामान्य विशेषताएं'

# प्रश्न 5. निर्गुण काव्यधारा के अभिव्यंजना पक्ष का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

**उत्तर – संदर्भ –** देखें अध्याय-7, पृष्ठ-79, 'निर्गुण काव्यधारा का अभिव्यंजना पक्ष'

# प्रश्न 6. प्रेमकाव्य परम्परा का परिचय दीजिए।

**उत्तर-संदर्भ-**देखें अध्याय-8, पृष्ठ-90, 'सूफी-प्रेमकाव्य परंपरा'

प्रश्न 7. रामभिक्त साहित्य के विकास पर प्रकाश डालिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-10, पृष्ठ-117, 'रामभिक्त साहित्य का विकास'

प्रश्न 8. रीतिबद्ध कवियों के वर्ण्य-विषयों का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-12, पृष्ठ-139, 'रीतिबद्ध और रीतिसिद्ध कवियों के वर्ण्य-विषय'

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणियां लिखिए-

# (क) बिहारी का काव्य

उत्तर – रीतिसिद्ध किवयों में सर्वप्रथम जिस किव का नाम लिया जाता है, वह है-बिहारी। बिहारी रीतिकाल के सर्वाधिक लोकप्रिय किव हैं। बिहारी की एक ही रचना मिलती है, जिसका नाम है—'बिहारी सतसई'। सतसई का शाब्दिक अर्थ है—सात सौ (सप्तशती)। 'बिहारी सतसई' में सात सौ दोहे होने के कारण इसका नाम सतसई रखा गया। डॉ. गणपितचंद्र गुप्त 'बिहारी सतसई' लिखने का कारण कुछ यूं बताते हैं कि जयपुर के महाराजा जयसिंह अपनी एक नविवाहिता रानी के सौंदर्यपाश में इस प्रकार बंध गए थे कि वे रात-दिन महल में ही पड़े रहते थे। इससे उनका राज-काज चौपट होने लग गया। सभी राज्य अधिकारी परेशान हो गए। सब चाहते थे कि राजा महल से निकलकर बाहर आए। किंतु किसी की हिम्मत नहीं थी कि वह इसके लिए राजा से प्रार्थना कर सके। ऐसे ही समय में महाकिव घूमते हुए जयपुर पहुँचे। उन्होंने सारी बात सुनकर राजा के पास एक दोहा लिखकर भेजा—

# निहं परागु, नहं मधुर मधु, निहं विकास इहिं काल। अलि! कली ही सौ बंध्यो, आगे कौन हवाल।

महाराजा जयसिंह इस दोहे को पढ़कर सारी स्थिति समझ गए और अपना राज-कार्य सम्भालने लगे। साथ ही उन्होंने आदेश दिया कि वे ऐसे ही सुंदर दोहे और लिखें। इसी से प्रेरित होकर बिहारी ने सात सौ दोहों की रचना की, जो 'बिहारी सतसई' कहलाई।

बिहारी की सतसई में प्रकृति और नारी सौंदर्य के विभिन्न रूप मिलते हैं। प्रेम, विरह, भिक्तभाव, दर्शन आदि का प्रतिपादन भी इसमें मिलता है। सौंदर्य और प्रेम के निरूपण में बिहारी को सफलता मिली। किंतु विरह वर्णन में अतिशयोक्ति हो गई। जो अस्वाभाविक एवं हास्यास्पद प्रतीत होता है।

राजनीति, दर्शन नीति आदि के विचारों का भी प्रतिपादन बिहारी ने प्रभावशाली रूप में किया है। इसी प्रकार भक्ति की व्यंजना भी उन्होंने सफलतापूर्वक की है। यहाँ उनके कुछ दोहे प्रस्तृत है—

# Sample Preview of The Chapter

Published by:



www.neerajbooks.com

# हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल)

# काल-विभाजन और नामकरण की समस्या



# परिचय

हिंदी साहित्य के इतिहास के अध्ययन की सुविधा के लिए कुछ विद्वानों ने इसे कुछ विशिष्ट काल-खंडों में विभाजित किया है। काल-विभाजन से साहित्य की मुख्य धाराओं के विषय-बोध में वैज्ञानिकता और सैद्धान्तिक गम्भीरता का पुट आ जाता है। सामान्यत: किसी भी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन कृति, कर्ता, पद्धति या शैली तथा विषय के आधार पर किया जाता है। जब किसी काल में प्रवृत्ति का मुख्य आधार नहीं मिलता, तो उस युग के सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण साहित्यकार के नाम से उस सम्पूर्ण कालखंड की साहित्यिक विशेषताओं को जानने का प्रयास किया जाता है। काल-विभाजन के लिए यदि कोई विशिष्ट आधार नहीं मिलता, तब समग्र काल को आदि, मध्य और आधुनिक काल में विभाजित कर लिया जाता है। वर्तमान समय काल-विभाजन का यह रूप पर्याप्त प्रचलित है, परन्तु यह वैज्ञानिक कसौटी पर खरा नहीं उतरता। वस्तुत: हिंदी-साहित्य के इतिहास के अध्ययन के लिए प्रवृत्तियों पर आधारित काल-विभाजन को ही अधिक उचित कहा जा सकता है, जैसे–भिक्तकाल, रीतिकाल आदि।

# अध्याय का विहंगावलोकन

# काल-विभाजन और नामकरण की आवश्यकता

इतिहास बोध को हम आलोचनात्मक चेतना कह सकते हैं। यह चेतना जीवन और संस्कृति की पर्यवेक्षिका स्वरूप होती है। इससे समाज और साहित्य के परस्पर सम्बन्धों को हम भली-भाँति समझ लेते हैं, इसलिए साहित्य का इतिहासकार इन परस्पर सम्बन्धों परिवर्तनों का जितनी गहराई से अनुभव करेगा, वह उतना ही प्रमाणिक काल विभाजन प्रस्तुत करेगा, इसीलिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की प्रखर

आलोचनात्मक दृष्टि की ओर हम बार-बार देखते हैं। उन्होंने अपने शोधपुर्ण ग्रन्थ '*हिंदी साहित्य का इतिहास*' में लिखा है.

"शिक्षित जनता की जिन-जिन अवृत्तियों के अनुसार हमारे सिंहत्य के स्वरूप में जो-जो परिवर्तलन होते आए हैं, जिन-जिन प्रभावों की प्रेरणा से काव्यधारा की भिन्न-भिन्न शाखाएँ फूटती रही हैं, उन सबके सम्यक् निरूपण तथा उनकी दृष्टि से किए हुए सुसंगत काल-विभाजन के बिना साहित्य के इतिहास का सच्चा अध्ययन कठिन दिखाई पड़ता था। सात-आठ सौ वर्षों की संचित ग्रंथ राशि सामने लगी हुई थी, पर ऐसी निर्दिष्ट सारणियों की उद्भावना नहीं हुई थी, जिनके अनुसार सुगमता से प्रभूत सामग्री का वर्गीकरण होता।"

उपर्युक्त कथन का अभिप्राय यही है कि ठोस इतिहास की दृष्टि से ही सुसंगत काल-विभाजन किया जा सकता है। इससे ही इतिहास का अध्ययन सुगम हो सकता है।

# काल-विभाजन और नामकरण का आधार

हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखन से सम्बन्धित तीसरी समस्या काल-विभाजन और नामकरण की है। मोटे तौर पर साहित्य के विकास के वर्गीकरण की दो पद्धतियां सम्भव हैं—

- 1. साहित्यिक विकास का युगपरक वर्गीकरण तथा
- 2. साहित्यिक विकास का स्वरूपगत वर्गीकरण।

युगपरक वर्गीकरण विभिन्न युगों की परिस्थितियों और प्रवृत्तियों को ध्यान में रखकर किया जाता है, क्योंकि प्रत्येक युग की सामाजिक चेतना और साहित्यिक प्रवृत्तियों में बहुत गहरा सम्बन्ध होता है। हिंदी साहित्य के इतिहासकारों ने इसी युगपरक पद्धित को अपनाते हुए हिंदी साहित्य के इतिहास को आदिकाल, भिक्तिकाल, रीतिकाल आदि खण्डों में विभाजित किया है। साहित्यिक विकास का स्वरूपगत वर्गीकरण साहित्य की आकृति और प्रकृति के आधार पर किया जा सकता है। आकृति के आधार पर विधागत वर्गीकरण होता है।

2 / NEERAJ : हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल)

# हिंदी साहित्य के कालविभाजन की समस्या

साहित्य में एक प्रकार की प्रवृत्ति गतिशील होती है, तो उसके समानान्तर कभी–कभी प्रतिरोधी प्रवृत्ति भी गतिशील हो उठती है। इससे काल–विभाजन की बहुत बडी समस्या खडी हो जाती है।

काल-विभाजन की दूसरी समस्या संक्रांति काल को लेकर होती है। संक्रमण काल के जिन बिन्दुओं पर इतिहास के दो युगों को तोड़ा जाता है, वहाँ इतिहासकार की चिन्तनधारा ही विच्छिन्न नहीं होती है, अपितु इस टूटने की प्रक्रिया में बहुत कुछ दूर हो जाता है।

काल-विभाजन की तीसरी समस्या है—साहित्य के इतिहास में और राजनीतिक इतिहास में समानता को मान लेना। इससे सही काल-विभाजन नहीं हो सकता है।

# हिंदी साहित्य के काल-विभाजन के विभिन्न प्रयास

हिंदी साहित्य के काल-विभाजन की दिशा में प्रयत्न जॉर्ज ग्रियर्सन तथा मिश्रबन्धुओं के द्वारा प्रारम्भ हो चुके थे, किन्तु हिंदी साहित्य के अधिकतर इतिहासकारों ने आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के काल-विभाजन और विभिन्न कालों के नामकरण को ही मुख्यतः स्वीकार किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिंदी-साहित्य के आदिकाल को वीरगाथा काल (संवत 1050 से संवत 1375 तक), पूर्वमध्यकाल को भिक्तकाल (संवत 1375 से संवत 1700 तक), उत्तर-मध्यकाल को गीतिकाल (संवत 1700 से संवत 1900 तक), आधुनिक काल को गद्य काल (संवत 1900 से अब तक) नाम से अभिहित किया है। साहित्य की सतत विकासशील प्रवृत्ति के कारण कोई भी काल-विभाजन और नामकरण अन्तिम नहीं कहा जा सकता, किंतु हिंदी साहित्य के इतिहासकारों ने शुक्ल जी के काल-विभाजन को सबसे अधिक मान्य माना है।

# नामकरण संबंधी विवाद आदिकाल

हिंदी साहित्य के आदिकाल के नामकरण के विषय में विभिन्न इतिहासकारों ने भिन्न-भिन्न मत प्रस्तुत किए हैं। इन सभी इतिहासकारों ने अपने मतों की पुष्टि के लिए विभिन्न विचार प्रस्तुत किये हैं। आचार्य रामचन्द ने आदिकाल (सं. 1050 से 1375 वि.) को वीरगाथाओं की प्रमुखता के कारण वीरगाथा काल नाम दिया है।

शुक्ल जी द्वारा जिन बारह रचनाओं के आधार पर आदिकाल को वीरगाथा काल की संज्ञा दी गई है, उन ग्रन्थों में 'कीर्तिलता' तथा 'कीर्तिपताका' अपभ्रंश भाषा की रचनाएं हैं। 'पदावली' एवं 'खुसरो की पहेलियों' का वीरगाथाओं से कोई सम्बन्ध नहीं है। बीसलदेव रासो शृंगारिक विरह काव्य है। खुमान रासो एवं पृथ्वीराज रासो अर्द्ध-प्रामाणिक ग्रन्थ हैं। खुमान रासो में महाराणा प्रताप तक के समय का वर्णन है।

शुक्ल जी के सामने उक्त बारह ग्रन्थों की सीमित सामग्री थी। परवर्ती विद्वानों ने आदिकाल में रचित अन्य अनेक ग्रन्थों की खोज की है। महापिण्डत राहुल सांकृत्यायन तथा डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने नाथों, सिद्धों तथा बौद्धों की अनेक रचनाओं का पता लगाया है। उस विशाल साहित्य के सामने इस काल की वीरगाथात्मक रचनाएं इस कालखंड के नामकरण में अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं उहरतीं। शुक्ल जी के सामने संदेश रासक, पद्म चिरत्र, पाहुड़ दोहा, हरिवंश पुराण, जसहर चिरत्र, भविसयत्त कथा आदि रचनाओं की सामग्री नहीं थी। अत: शुक्ल जी द्वारा प्रतिपादित 'वीरगाथा काल' नाम को उचित नहीं कहा जा सकता।

चन्द्रधार शर्मा गुलेरी तथा डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने इस काल को अपभ्रंश काल कहा है। आदिकाल के साहित्य में अपभ्रंश भाषा की प्रधानता को स्वीकार करते हुए उन्होंने इस काल को अपभ्रंश काल मानना ठीक समझा है। हमारी दृष्टि में भाषा के आधार पर किसी काल का नामकरण उचित नहीं माना जा सकता। साहित्य के इतिहास को कालखंड का नामकरण उस युग विशेष की प्रवृत्तियों एवं प्रतिपाद्य विषय के आधार पर होना चाहिए। भाषाशास्त्र की दृष्टि से भी अपभ्रंश तथा हिंदी दो भिन्न-भिन्न भाषाएं हैं। इस काल को यदि अपभ्रंश काल कहा जाए, तो पाठक का ध्यान हिंदी-साहित्य की ओर जाकृष्ट होता है। इस कारण आदिकाल को अपभ्रंश काल कहना उचित प्रतीत नहीं होता।

डॉ. रामकुमार वर्मा ने इस काल को संधि-काल की संज्ञा दी है। उन्होंने इसे चारण काल भी कहा है। डॉ. वर्मा ने अपभ्रंश भाषा के अन्त तथा हिंदी भाषा के प्रारम्भ के कारण इसे सन्धि-काल कहा है, किंतु इस काल में केवल चारण कवियों का प्राधान्य नहीं रहा। इस कारण इसे सन्धि-काल या चारण काल कहना उचित नहीं है।

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने इस काल को बीजवपन काल कहा है परन्तु यह नाम भी समीचीन नहीं कहा जा सकता। साहित्यिक प्रवृत्तियों के आधार पर इस काल के किवयों ने प्राचीन रूढ़ियों को अपनाया और इसे साहित्य में स्थान मिला। उस समय का साहित्यकार अत्यन्त सजग एवं उद्बुद्ध था। इस नाम से ऐसा भ्रम होता है, मानो हिंदी–साहित्य का प्रारम्भ किसी परम्परा से सम्बद्ध नहीं है।

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने इस काल को सिद्ध-सामन्त काल कहना ठीक समझा है। उन्होंने इस काल का प्रारम्भ आठवीं शताब्दी माना है। सिद्ध-सामन्त काल किसी साहित्यिक पद्धित का परिचायक नहीं है। सामन्त शब्द से पाठक का ध्यान अनायास ही उस काल के किवयों की ओर न जाकर राजपूत सामन्तों की ओर जाता है। इस प्रकार सिद्ध-सामन्त काल नाम को भी सार्थक नहीं कहा जा सकता।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी इस काल को 'आदिकाल' कहना ही अधिक उचित समझते हैं। उन्होंने इस काल के साहित्य को अन्तर्विरोधों का साहित्य कहा है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हिंदी साहित्य के प्रारम्भिक युग को 'आदिकाल' कहना ही अधिक समीचीन है। इस काल का

# काल-विभाजन और नामकरण की समस्या / 3

साहित्य काफी समृद्ध है। आदिकाल नाम किसी प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्ति पर आधारित न होने पर भी इस नामकरण की एक विशेषता यह है कि इससे किसी विशिष्ट प्रवृत्ति के प्रति अनुचित पक्षपात तथा किसी अन्य के प्रति अवांछनीय उपेक्षा का भाव प्रकट नहीं होता। इस कारण अन्य नामों की अपेक्षा इस युग को आदिकाल की संज्ञा देना ही अधिक उचित है।

#### भक्तिकाल

चौदहवीं शती के मध्य से सत्रहवीं शती के मध्य शती के मध्य से सत्रहवीं शती के मध्य तक (1318 ई. से 1643 ई) का कालखंड हिंदी साहित्य के इतिहास में 'भिक्तकाल' को कहा जाता हैं। इस काल खंड के नामकरण का श्रेय आचार्य रामचंद्र शुक्ल को है। कुछ विद्वान इसे पूर्व मध्यकाल भी कहते हैं। हिंदी साहित्येतिहास लेखन में ये दोनों नाम एक साथ चलते हैं, पर 'भिक्तकाल' नाम को अधिक मान्यता मिली है, क्योंकि अगर आदिकाल के समान इस काल में भी कोई प्रवृत्ति न होती, तो 'पूर्व मध्यकाल' नाम से काम चलाया जा सकता था, पर इस काल की प्रमुख प्रवृत्ति 'भिक्त' स्पष्ट होने के कारण यह नाम प्रासंगिक है।

#### रीतिकाल

हिंदी साहित्य के काल विभाजन और नामकरण में आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा तत्कालीन युगीन प्रवृत्तियों को सर्वाधिक प्राथमिकता दी गई है। विभिन्न प्रवृत्तियों की प्रमुखता के आधार पर ही उन्होंने साहित्य के अलग–अलग कालखण्डों का नामकरण किया है। इसी मापदंड को अपनाते हुए हिंदी साहित्य के उत्तर मध्यकाल अर्थात 1700–1900 वि. के कालखण्ड में रीति तत्त्व की प्रधानता होने के कारण शुक्ल जी ने इस कालखण्ड को 'रीतिकाल' नाम दिया।

इस समय अविध में अधिकांश किवयों द्वारा काव्यांगों के लक्षण एवं उदाहरण देने वाले ग्रंथों की रचना की गई। अनेक हिंदी किवयों द्वारा आचार्यत्व की शैली अपनाते हुए लक्षण ग्रंथों की पिरपाटी पर अलंकार, रस, नायिका भेद आदि काव्यांगों का विस्तृत विवेचन किया गया। रीति की यह धारणा इतनी बलवती थी कि किवयों /आचार्यों के मध्य इस बात पर भी विवाद होता थी कि अमुक पंक्ति में कौन-सा अलंकार, रस, शब्दशक्ति या ध्विन है। इन्ही सब तत्त्वों या प्रवृत्तियों को ध्यान में रखते हुए उत्तर मध्यकाल का नामकरण 'रीतिकाल' के रूप में किया गया।

हालांकि मिश्रबंधुओं ने इसे 'अलंकृत काल कहा', डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' ने इसे कला-काल नाम दिया, पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इसे 'शृंगार काल' नाम दिया। किंतु इन सभी नामों पर सहमति नहीं बन पाई, क्योंकि कोई भी नाम युग के साहित्य की संपूर्ण साहित्यिक प्रवृत्तियों को पहचान नहीं देता। अत: रीतिकाल नाम ही समीचीन है।

# आधुनिक काल

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास के चतुर्थ कालखंड को गद्य की प्रमुखता के कारण गद्यकाल नाम दिया है और इसकी समय सीमा संवत् 1900 वि. से 1980 वि. अर्थात सन् 1843 ई. से 1923 ई. स्वीकार की है। आधुनिक काल के लिए जो विभिन्न नाम दिए गए हैं, वे इस प्रकार हैं–

1. गद्यकाल आचार्य रामचंद्र शुक्ल

मिश्रबंधु

2. वर्तमान काल

3. आधुनिक काल डॉ. रामकुमार वर्मा

4. आधुनिक काल डॉ. गणपितचंद्र गुप्त

आचार्य शुक्ल ने इस काल का नाम गद्यकाल इसलिए रखा, क्योंकि इस काल में गद्य की प्रधानता परिलक्षित हो रही है तथापि गद्यकाल कहने से इस काल का प्रचुर परिमाण में लिखा गया पद्य साहित्य उपेक्षित-सा हो जाता है, अत: इस काल को आधुनिक काल कहना अधिक उपयुक्त है।

आधुनिक काल के प्रथम चरण को भारतेंदु काल कहा गया हैं, क्योंकि यह नामकरण भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र के व्यक्तित्व को ध्यान में रखकर किया गया है। भारतेंदु जी का रचनाकाल सन 1850 ई. से 1885 ई. तक रहा है।

भारतेंदु युग के प्रमुख किवयों में भारतेंदु के अतिरिक्त बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन', प्रतापनारायण मिश्र, ठाकुर जगमोहन सिंह, अम्बिकादत्त व्यास, राधाचरण गोस्वामी, दुर्गादत्त व्यास, वियोगी हरि आदि हैं।

हिंदी नवजागरण से अभिप्राय सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद भारत के हिंदी प्रदेशों में आये राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जागरण से है। हिंदी-नवजागरण की सबसे प्रमुख विशेषता हिंदी-प्रदेश की जनता में स्वातंत्र्य-चेतना का जागृत होना है। इसका पहला चरण स्वयं 1857 का विद्रोह था।

जागरण सुधार काल/द्विवेदी युग (1900-1818)— आधुनिक काल का दूसरा युग सन् 1900 ई. के करीब आरंभ होता है। इस काल का नाम द्विवेदी युग दिया गया है। इस काल का आरम्भ अधिकार विद्वान् आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा 'सरस्वती' पित्रका के सम्पादन समय से ही मानने- स्वीकारने के पक्षधर हैं। यह सर्वविदित है कि 'सरस्वती' पित्रका का आरंभ आचार्य द्विवेदी ने सन् 1903 ई. से ही किया था। इसके माध्यम से उन्होंने साहित्य के मानक स्वरूप को स्थापित किया इस दृष्टि से उन्होंने न केवल गद्य की ओर ही अपनी दृष्टि दौड़ाई, अपितु पद्य की ओर भी। इस प्रयास में उन्होंने भाषा की शुद्धता और मर्यादाबद्ध नैतिक साहित्य पर विशेष बल दिया।

यह सुस्पष्ट हो चुका है कि भारतेन्दु युग का साहित्य प्रेरणादायक और उमंगमय था। इससे भिन्न द्विवेदी युग का साहित्य हर प्रकार से अनुशासनात्मक आधार प्रधान युग था। हिंदी काव्य के क्षेत्र में द्विवेदीजी ने व्यवहृत छन्दों के स्थान पर संस्कृत पदावली को स्थान दिया। इससे इस पदावली को व्यापक स्थान मिलने लगा। इस प्रकार हिंदी के इस युग में भिक्त कालीन और रीतिकालीन परम्परा की विदाई हो गयी। उसके स्थान पर संस्कृत साहित्य की पद्धति

# 4 / NEERAJ : हिंदी साहित्य का इतिहास (रीतिकाल)

प्रतिष्ठित होने लगी। इस काल में एक बात और हुई वह यह कि कविता में इतिवृत्तत्मकता की प्रवृत्ति का प्रचार-प्रसार दिनोंदिन बढ़ता ही गया।

छायावाद काल (1918-1936) — छायावाद के आरंभ के विषय में साहित्य-समीक्षकों की आम सहमित है। इस काल का आरंभ साहित्य-समीक्षक द्विवेदी युग के अवसान काल से ही मानते हैं। दूसरे शब्दों में छायावाद का आरंभ हिंदी के इतिहासकारों ने सन् 1920 ई. स्वीकार किया है।

यह भी सच है कि द्विवेदी युग में ही छायावादी साहित्य की झलक दिखाई देने लगी थी। सन् 1916 ई. में निराला की 'जूही की कली' प्रकाश में आयी थी। उसके बाद सन् 1918 ई. में प्रसाद की किवता 'झरना' और पंत की किवता 'पल्लव' की कुछ किवताएं सन् 1920 ई. के लगभग प्रकाशित हुई थी। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि सन् 1915 ई. के आस-पास छायावादी साहित्य का उदय होने लगा था, लेकिन इसका पूरा प्रभाव तो सन् 1920 ई. के आस-पास ही दिखाई देता है, इसलिए इसका समय विद्वानों ने यही स्वीकार किया है।

छायावाद का अंतिम विद्वानों ने सन् 1936 ई. ही माना है। उस समय छायावादी साहित्य की अति महत्त्वपूर्ण रचनाओं के दर्शन हो चुके थे। सन् 1936 ई. में प्रसाद की सर्वश्रेष्ठ कृति 'कामायनी' निराला की 'राम की शक्ति पूजा', प्रेमचन्द का 'गोदान' आदि रचनाएं छायावादी युग की सर्वोच्च और सर्वोकृष्ट रचनाएं स्वीकृत हुईं। यही नहीं, इसी वर्ष 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना भी हुईं। इन तथ्यों के आधार पर ही साहित्य-समीक्षकों ने छायावादी साहित्य का अंतिम समय सन् 1936 ई. ही माना है।

छायावाद के नाम पर सभी विद्वानों की एक ही राय है। छायावादी साहित्य जो एक विशिष्ट साहित्यिक मूल्य दिखाई देता है, उसमें रोमांटिक भाव बोध जहाँ पुरानी रूढ़ियों से छुटकारे की आकांक्षा करता है, वहीं दूसरी ओर, यह ब्रिटिश साम्राज्यवाद से भी आजादी का स्वप्न देखता है। यह दिलचस्प बात है साहित्य में छायावाद और राजनीति का आगमन और महात्मा गांधी के आगमन का लगभग एक ही साथ हुआ था। यही कारण है कि मुंशी प्रेमचन्द ने अपने कथा–साहित्य में गांधी युग की विराट् तस्वीर खींची थी। छायावादी साहित्य में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का सर्वाधिक प्रभाव रहा। यह इसलिए उनकी आध्यात्मिक और रहस्यवादी कविताओं ने इस साहित्य को मुख्य रूप से अंकुरित किया। इसीलिए इस साहित्य में रहस्यात्मक अनुभूति के और अभूर्त भाव की अभिव्यंजना के लिए लाक्षणिक और चित्रमयी शैली भाषा में रचनाएं सामने आने लगीं। इस प्रकार अनुभूति, दर्शन और कल्पना के योग से एक सर्वथा नवीन और अभृतपूर्व काव्य–स्वरूप प्रत्यक्ष हो उठा।

प्रगति-प्रयोग काल (1936-1953)—छायावादोत्तर साहित्य में विविध प्रकार की काव्य प्रवृत्तियाँ निरंतर परिवर्तनशील रहीं। इस साहित्य में विविध प्रकार के आन्दोलन उठ खड़े हुए, जैसे-प्रगतिवाद, व्यक्तिवाद, गीतिकाव्य, राष्ट्रीय- सांस्कृतिक कविता, प्रयोगवाद, नई किवता, नई कहानी, अकिवता आदि । यहाँ इस प्रकार के आन्दोलनों के नामकरण और समय-निर्धारण की कोई प्रासंगिकता नहीं है। यह इसिलए कि उनके काल-विभाजन और नामकरण के विषय कोई मत-भिन्नता नहीं है। दूसरी बात यह है कि इस काल का भी अन्य कालों के समान महत्त्व और प्रभाव है।

नवलेखन काल (1953 से आगे)—स्वतंत्रता के बाद लिखी गई किवताओं को 'नई किवता' कहा गया, जिनमें नए मूल्यों और नए शिल्प विधान का अन्वेषण किया गया। 'नई किवता' नाम पर यह आपित उठायी जाती है कि नयापन किसी साहित्य की विकासशील परंपरा का द्योतक होता है। अत: इस काल की किवता को नयी किवता क्यों कहा गया? फिर भी नई किवता नाम स्वतंत्रता के बाद लिखी गई उन किवताओं के लिए रूढ़ हो गया, जो अपने विषय और शिल्प में प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का विकास होकर भी विशिष्ट हैं। इस नई किवता के अनेक स्रोत फूटे और कई काव्यांदोलन सामने आए, जैसे—अकिवता, अतिकिविता, अस्वीकृत किवता आदि। इसी प्रकार कहानी में भी नई कहानी का जोर चल पड़ा। साहित्य के नए-नए रूप और आयाम सामने आए। इन सभी प्रवृत्तियों को एक साथ समेटना विवादास्पद हो सकता है, पर सुविधा की दृष्टि से नवलेखन काल नाम समीचीन है।

#### \_\_\_\_ बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित कथनों में से सही उत्तर चुनकर  $(\sqrt{})$  का निशान लगाएँ-

इतिहास के काल-विभाजन और नामकरण की आवश्यकता क्यों पड़ती है?

- (क) अध्ययन की सुविधा के लिए
- (ख) इतिहास को सही ढंग से समझने के लिए
- (ग) काल-विभाजन और नामकरण की कोई आवश्यकता नहीं है
- (घ) क और ख दोनों सही हैं

उत्तर-(घ) क और ख दोनों सही हैं।

प्रश्न 2. काल-विभाजन और नामकरण का मुख्य आधार क्या होता है?

उत्तर—हिंदी साहित्य का इतिहास एक हजार अथवा उससे अधिक वर्षों की साहित्यिक धारा का इतिहास है। इस काल-विभाजन में आये इतिहास का भिन्न-भिन्न विद्वानों ने भिन्न भिन्न रूपों में वर्गीकरण किया है और उसका भिन्न-भिन्न नामकरण किया है। इसमें आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ. श्यामसुंदर दास, डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. रामकुमार वर्मा, राहुल सांकृत्यायन, मिश्रबंधु आदि विद्वान सम्मिलत हैं। आचार्य शुक्ल हिंदी साहित्य के प्रामाणिक इतिहासकार हैं। इनके परवर्ती अधिकांश इतिहासकारों ने इन्ही के काल-विभाजन के मानदंड को स्वीकार किया है। इनके अनुसार हिंदी साहित्य का इतिहास चार भागों में विभक्त किया जा सकता है—